बदलते दौर में बदलती शिक्षण पद्धतियां

– रघुवेन्द्र सिंह

कोई भी कार्य आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति से ही संभव होता है। हम सभी शिक्षक अपने–अपने विद्यालय में किसी न किसी रूप में शिक्षण कार्य कर रहे हैं और अच्छा कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक और बच्चे ही सीख रहे होते हैं लेकिन बालशोध प्रक्रिया एक समग्र शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसका क्षेत्र विस्तृत है। यह प्रक्रिया बहुआयामी और बहुउद्देशीय है। इसको करने पर विभिन्न विषयों में अंतर्संबंध समझ आते हैं कि सभी विषय कैसे एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं और किस स्तर पर एक–दूसरे से भिन्न हैं। यह प्रक्रिया शिक्षा के शैक्षिक, सामाजिक और संवैधानिक उद्देश्यों की ओर हमें सहज रूप से लेकर जाती है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक व परिवेशीय समावेशन होता है।

इस प्रक्रिया के द्वारा स्थानीय परिस्थितियों के साथ–साथ वहां के रीति–रिवाजों का पता चलता है, जिन पर बच्चों को सोचने का अवसर मिलता है और उनकी उपयोगिता व अनुपयोगिता को समझ कर आगे बढ़ने के रास्ते बच्चों के द्वारा तलाशे जा सकते हैं। बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जन्म लेने लगता है और इसमें शामिल सभी लोगों के विचार समृद्ध होने का काम होने लगता है। जिसको हम अवधारणात्मक बदलाव के रूप में भी देख सकते हैं। आने वाली पीढ़ी को इस तरफ ले जाना मुझे इसलिए भी जरूरी लगता है क्योंकि अब उनका काम इसके बिना चलने वाला नहीं है।

हम सभी गत कई वर्षों से सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति पर कार्य कर रहे हैं। यह शैक्षिक प्रक्रिया इस प्रकार के मूल्यांकन के कार्य को सहज व सरल बनाती है। बच्चों को व्यापक रूप से समझने के अवसर प्रदान करती है। सतत् एवम व्यापक मूल्यांकन करने के उद्देश्य से हम अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को बाल केन्द्रित प्रक्रियाओं के रूप में संपादित करने का प्रयास कर रहे हैं। गत वर्ष हमने अपने विद्यालय की गतिविधियों को सामने लाने व समुदाय को विद्यालय के शैक्षिक वातावरण से जोड़ने व अवगत कराने के उद्देश्य से 15 दिसम्बर, 2017 को बच्चों के द्वारा इस प्रक्रिया के अंतर्गत किये गए कार्य को प्रदर्शित करने के लिए एक मेले का आयोजन किया जिसमें दो और पड़ोसी विद्यालय शामिल रहे। मैं यहां कक्षा 3 के बच्चों के साथ एक कार्यदिवस में की गयी शिक्षण प्रक्रिया का उल्लेख करना चाहूंगा।

हम कक्षा–3 के बच्चों के साथ 'भोजन' शिक्षण संबोध पर कार्य कर रहे थे। पूर्व कार्य दिवस में बच्चों के द्वारा खाने–पीने की वस्तुओं की तैयार सूची से खाने–पीने की वस्तुओं को उनके मिलने वाले स्रोत यानी पेड़–पौधों से मिलने वाली व जीव जंतुओं से मिलने वाली खाने–पीने की वस्तुओं के आधार पर वर्गीकरण, तालिका में किया

जाना था। मैंने तालिका बनाकर एक चार्ट व्हाइट बोर्ड पर चिमटी से टांग दिया और बच्चों से अपनी अपनी सूची से बारी–बारी से एक–एक खाने–पीने वाली वस्तु का नाम पढकर बताने और दूसरे बच्चों को सुनने के लिए कहा। इस प्रकार प्रत्येक बच्चा एक–एक नाम पढ़कर बताने लगा। प्रत्येक बच्चे द्वारा बताई गयी वस्तु के बारे में समूह में बातचीत की गयी कि वह वस्तु किससे प्राप्त होती है? जैसे, एक बच्चे ने पढ़कर बताया "आलू"। तो उसके बारे में पूछा गया कि 'आलू' हमें कैसे और कहां से मिलता है? बच्चों ने बताया कि आलू पौधे से मिलता है। मैंने पूछा कि आलू चार्ट पर बनी तालिका में किस तरफ लिखना है? बच्चों ने बताया कि पेड़–पौधे से मिलने वाली लाइन में। इस प्रकार क्रम आगे बढ़ता गया। पेड़–पौधे से मिलने वाली वस्तुओं के नाम अधिक आ रहे थे। कुछ देर बाद एक बच्चे ने बताया, "अंडा"। इस पर मैंने उनसे पूछा कि 'अंडा' हमें किससे मिलता है? बच्चों ने बताया कि अंडा हमे मुर्गी और बतख से मिलता है। मैंने पूछा कि इसको तालिका में किस लाइन में लिखा जाएगा तो बच्चों ने एक साथ मिलकर बताया कि जीव–जंतुओं से मिलने वाली तालिका में। इस प्रकार हमारी तालिका में पेड़–पौधे से मिलने वाली लगभग 60 से 70 और जीव जंतुओं से मिलने वाली 8 से 10 वस्तुओं के नाम अंकित हो चुके थे। लेकिन तभी एक बच्चे ने 'शहद' का नाम बताया। इस पर भी मेरे द्वारा वही प्रश्न दोहराया गया कि यह कैसे मिलता है? मेरा प्रश्न सुनकर बच्चे सोच में पड़ गए।

बच्चे यह स्पष्ट नहीं कर पा रहे थे कि शहद मधुमक्खी से मिलता है या फूलों से। इससे मुझे लगा कि बच्चे शहद बनने की प्रक्रिया को समझते हैं। मैंने अपना प्रश्न पुनः दोहराया। तब दीपक ने बताया कि सर, "शहद तो मधुमक्खी फूलों के रस से बनाती है।" उसने मुझसे ही प्रश्न कर दिया कि इसको कहां लिखा जाएगा? यह तो दोनों के सहयोग से ही बनता हैं?

तब मैंने सोचा कि इस तालिका में तो इस प्रकार की कोई स्थिति नहीं रखी गई है। इस पर मैंने चार्ट के खाली कोने में एक और कॉलम पेड़–पौधे और जीव–जंतुओं दोनों के सहयोग से मिलने वाली वस्तु का बनाया और उसमें 'शहद' लिखा। अब और आगे बढ़े तो वरुण ने पीने की वस्तुओं में 'पानी' का नाम बताया। पानी का नाम सुनकर भी बच्चे कुछ परेशान से हो गए कि पानी को किस तालिका में लिखा जाएगा? पहले तो वह शांत रहे लेकिन कुछ देर बाद वह काना–फूसी करने लगे। कुछ देर बाद अभय ने बताया कि सर पानी तो हमें न पेड़ से मिलता है, न ही जानवरों से। यह तो हमें नल, नदी, कुओं और वर्षा से मिलता है। तब बच्चों ने कहा इसके लिए भी अलग लाइन बनानी होगी। इस पर मैंने चार्ट के दूसरे खाली कोने पर पेड़–पौधे और जानवरों के अलावा मिलने वाली खाने–पीने की वस्तु का एक और कॉलम बना कर उसमें पानी लिखा। इस प्रकार की और वस्तुओं के नाम सोचने को बच्चों से कहा जो हमें पौधों और जंतुओं से नहीं मिलती हैं और हम खाने में उपयोग करते हैं। बच्चों को कुछ नहीं सूझ रहा था। तब मैंने उनको मदद के लिए बताया कि हम अपनी दाल और सब्जी में एक सफेद रंग की वस्तु डालते हैं। अगर यह न डाली जाय तो खाने में स्वाद नहीं आता है। कभी जब स्कूल में भी यह कम रह जाता है तो तुम लोग भोजन माता से मांग कर खाने में डालते हो। इतने पर, सभी बच्चे समझ गए और एक साथ मिलकर बोले, "नमक"! और मैंने नमक को भी चार्ट पर उसके वर्ग में लिखा। इतना करते–करते आज का हमारी कक्षा का समय भी पूरा हो गया था।

इस प्रकार हमने देखा कि अभी तक हम खाने पीने की वस्तुओं को अमूमन दो आधार पेड़–पौधों और जानवरों से मिलने को ही प्राथमिक स्तर पर देख पाते थे। लेकिन इस प्रक्रिया में बच्चे ही हमें अन्य स्रोतों की ओर लेकर जाते हैं। उस दिन की प्रक्रिया में मुझे भी बच्चों के साथ बहुत कुछ सीखने को मिला। निष्कर्ष के तौर पर कहें तो, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 हमें अपने विद्यालयों को आनंदालय बनाने, शिक्षा को बाल केन्द्रित करने और स्कूली शिक्षा (ज्ञान) को बच्चों के अपने परिवेशीय ज्ञान से जोड़ने की बात करती है। यदि हम उपरोक्त एक दिन की शिक्षण प्रक्रिया के आलोक में देखें तो ये गतिविधियां इस प्रकार सम्पादित हो पा रही हैं, जिनमें बच्चों के अनुभव और उनके विचारों को स्थान मिल रहा है। बच्चों को उनके विचार रखने के उचित अवसरों के साथ–साथ उनके विचारों को सम्मान भी दिया जा रहा है जिससे वे अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ रख पा रहे हैं और आवश्यकता अनुसार अपने प्रश्नों को भी रख पा रहे हैं। शिक्षक और बच्चे एक–दूसरे को समझते हुए बेहतर सम्बन्ध बना पा रहे हैं और परस्पर विश्वास परिलक्षित हो रहा है। उनमें एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव भी उत्पन्न हो रहा है जिस कारण वे एक–दूसरे के विचारों को महत्व दे पा रहे हैं।

(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय, तिलपुरी–प्रथम में प्रधानाध्यापक के पद पर हैं)